



शिवस्तुति

श्री कृष्णजू राज़दान

*'शिव प्रणय' भाग से उद्धरित ' **शिवस्तुति**' 'कुलियात कृष्ण जू राज़दान' जम्मू एंड कश्मीर एकाडमी ऑफ आर्ट कल्चर ऐंड लेंग्वेजज़ श्रीनगर द्वारा प्रकाशित-१९८४ जे के ऑफसेट प्रंटर्स दिल्ली पेज संख्या ३०४।*

१ होश दिम लगयो पंपोश पादन हा सादन ह्रंदि सादो हो।

२ यूगियन ह्रंदि यूग् प्राणियन ह्रंदि प्राण् ज्ञा'नियन ह्रंदि हा ज्ञानो।
चानि प्रसाद् सू्त्य स्यद छि तफ सादन। हा सादन।

३ अच्यत् चानि सू्त्य च़्यत्कुय चे़नुन, नत् गछ़ि मेनुन क्रंजिल्यन पोन्य।
प्रेयम् ज़ल छुय वुज़न भाव नागरादन। हा सादन।

४ ब्रह्मन ज़नमस यिथ छुस न ब्रह्म सुमर'च़, वुछ म् म्यानि राक्षस प्रकर'च़ कुन।
चानि सू्त्य भक्ति चा'न्य क'र प्रहलादन। हा सादन।

५ पूरन प्वरश् छम चा'नी लादन, प्रणव् पान वंदहय पादन च़्वन।
नादब्यंद् कन थाव सान्यन नादन। हा सादन।

६ व्यच़ार् न्यत्रन ज़ा'न्य गाश अन छि अ'ज़, हर! हरम्वख च़्यय दिमहाय व'न्य।
निष्कल् मन निष्काम् राम रादन। हा सादन।

७ अनुग्रेह चोन गछ़ि आसुन सादन, क्या छु पापन कमन ज़्यादन प्यठ।
दय छुख त क्षय कर सान्यन अपरादन। हा सादन।

८ कृष्णय चानि कपटनि तल् नेरे, अद् कति पा'रिहे जामृह न'व्य न'व्य।
पुशि कति प्ययिहस होंज़न त रादन। हा सादन।

९ छो'पि मंज़्हय तस छो'चरा नेरे हे, अद् कति वनिहे ज़ेछर यूत।
याद हय रोज़िहस वुनि छुस आदन। हा सादन।

अर्थ

श्री पुष्कर नाथ रैना तथा अवतार कृष्ण रैना (लारियर त्राल कश्मीर)

१ हे संतों के संत शिव भगवान दे मुझे चेतना हे परम संत वंदना करूं चरण कमलों की तेरे। अथवा- आपके चरण कमलों की वंदना करता हूं हे साधओं के साधु मुझे होश दे चेतना दे।

२ आप योगियों के योगी, प्राणियों के प्राण हो, ज्ञानियों का ज्ञान हो, आप के प्रसाद याकृपा से ही साधओं की तपस्या सिद्ध होती है। मुझे चेतना देदो।

३ हे अचित अर्थात निश्चिंत! आप के कारण ही चित को जानने की शक्ति प्राप्त होती है। आपकी कृपा के बिना ऐसी चेष्ठा करना व्यर्थ है। (आपके प्रति भाव या प्रेम आपकी ही कृपा से उत्पन्न होता है।) प्रेम रूपी जल भाव अर्थात श्रद्धा रूपी स्रोतों (चश्मों) में उछलता है। अर्थात भाव से ही मन में प्रेम उमडता है। हे साधो मुझे होश देदो।

४ मैं ब्रह्मण होकर भी ब्रह्म की स्मृति अर्थात जानकारी से वंचित हूं। (ब्रह्म विस्मृत, ब्रह्म को न जानकर तो राक्षस ही ठहरा)। मेरी राक्षस प्रकृति को मत देखो, (क्योंकि राक्षस होकर भी) आपकी कृपा से ही प्रहलाद ने आपकी भक्ति की। हे साधओं के साधो। मुझे होश देदो।

५ हे पूर्ण पुरुष! मैं आपको ही चाहता हूं, हे प्रणव रूप आपके चारों पादों की बलाई लेता हूं। हे नादबिंदु रूप हमारी करुण भरी पुकार की ओर कान धर लीजिए। (अर्थात आप ओमकार के चार पादों वाले अ ओ म ं रूप हो)। मुझे होश देदो।

६ समझ के बिना हम अंधे हैं, हमारे विचार या मन रूपी अन्धे नेत्रों में ज्ञान रूपी प्रकाश का उदय कर दीजिए ताकि हे हरि, हे निष्कल मैं आपको निष्काम मन से हरमुख एवं रामरादन में ढूंढ पाओं। (रामरादन-एक स्थान का नाम विचा़र नाग के आसपास में।)

७ साधओं पर आपका अनुग्रह ही पर्याप्त है, फिर पाप तथा पुण्य किस गिनती में है। आप प्रभु जी हमारे अपराध क्षमा (क्षय) कर दो। मुझे होश देदो।

८ आपके आदेश पर यदि कृष्ण खरा उतरता तो नये नये वस्त्र क्यों पहनता (आवागमन) अर्थात आवागमन के चक्र में क्यों फंसता, तथा वस्त्र कभी लंबे कभी छोटे नहीं बनजाते। तभी तो नये नये वस्त्र(शरीर) धारण करने पडते हैं। सारांश यह कि आपकी भक्ति से पुनरजन्म के चक्र से छुटकारा मिलता मुझे।

९ यदि कृष्ण को मौन रहने से ही संक्षिप्त अर्थात सहज रासता मिलता तो इतनी लंबी वार्ता कहने की क्या आवश्यकता थी, फिर भी उसका स्मृण करने के लिए अभी समय है। (**अचित**- चिंता रहित। **चित्त**-अंतःकरण। **चित्त**- वह शक्ति जो प्रकृति तथा पुरुष में भिन्नता दिखाती है। भाव-श्रद्धा। लादन - चाह। ज्ञान कराने वाली मानसिक शक्ति)

English version by Shri PN Raina

Hosh – conscience; awareness;

1. **O! Lotus Feet Lord Shiva, bestow me with conscience high,**
   Lord of Saints the name is thy,
2. Yoga in yogis and life in living thou are,
   The power of knowledge in learned thou are,
   Your grace for success in penance is thy.
   Lord of Saints the name is thy,
3. You power my mind to think, or
   I write something without ink.
   Your love sprouts with faith firm and high,
   Lord of Saints the name is thy.
4. I, Brahmin pervert forgot the Braham 'I',
   Ignore my character having demon's eye,
   You graced Prahlada So want I.
   Lord of Saints the name is thy.

5. Supreme you are love you I,
   Pranav! Bow I on four feet thy,
   You being whole listen to my sigh,
   Lord of Saints the name is thy.
6. Light our minds' take, we are blind,
   Will trace you at Ramradan (the abode of Sri Ram), you are kind,
   at Harmukh too wish is my
   Lord of Saints the name is thy.
7. Sins have no trace to pious you grace,
   You are pervasive with powerful face,
   waive our crimes as request I,
   Lord of Saints the name is thy.
8. Krishna did not follow your dictate,
   Transmigration so became his fate,
   Incomplete remained he does not lie,
   Lord of Saints the name is thy.
9. Silence could not brevity provide,
   Detailed conveyed I as the guide,
   Name Him is still not late, cry hi hi
   Lord of Saints the name is thy